IOSR Journal Of Humanities And Social Science (IOSR-JHSS)
Volume 24, Issue 1, Ver. 2 (January. 2019) 89-94
e-ISSN: 2279-0837, p-ISSN: 2279-0845.
www.iosrjournals.org

करौली जिले के स्नातक स्तर कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों में भारतीय संस्कृति के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन

डॉ. अनुज कुमार शर्मा
सहायक प्रोफेसर
अर्थषास्त्र विभाग
भगवती षिक्षक प्रषिक्षण महाविद्यालय गंगापुर सिटी

प्रस्तावनाः–

मानव एक सामाजिक प्राणी है। इसलिए उसकी संस्कृति का विकास भी सामाजिक एवं समूहिक रूप से ही होता है समाज से अलग रहते हुए मानव न तो भौतिक क्षेत्र में ही उन्नति कर सकता है और न ही सांस्कृतिक क्षेत्र में अतः स्पष्ट है कि संस्कृति किसी एक व्यक्ति के प्रयत्नों का परिणाम नहीं होता है वह समाज के अनगिनत व्यक्तियों के समूहिक प्रयत्नों का परिणाम होती है। और वे प्रयत्न भी ऐसे होते है कि जिन्हें अपने वाली पीढ़ीयां भी सतत करती रहती है वह किसी एक युग की कृति नहीं होती वरण विभिन्न युगों के विविध मनुष्यों के सामूहिक तथा अनवरत श्रम का परिणाम होती है।

सामान्यत यही कहा जा सकता है कि समस्त मानव समाज के किसी विकास की व्यक्तिमय तथा समष्टिगय उपलब्धिया ही संस्कृति है। यदि व्युत्पत्ति की दृष्टि से इस पर विचार किया जाये तो सम उपसर्ग पूर्वक ''कृ'' धातु से संस्कृति पद निष्पन्न होता है। इस व्युत्पत्ति के आधार पर संस्कृति पद उस अर्थ का धोतक है। जो समस्त मानवता को विषेषता प्रदान करता है। मानवता को विषिष्ट बनाने वाले उसके आदर्ष उसकी परम्पराएं और मान्यताए है।

संक्षेप में हम कह सकते है कि श्रृति–स्मृति सदाचारिद से अनुमोदित एवं उन पर आधारित कृतिही भारतीय संस्कृति के स्वरूप है। सम्यक श्रेष्टाओं के सन्दर्भ में आर्य शब्द का विष्लेषण करके लिखा है कि आर्य वह है जो स्वभाव से करने योग्य कार्य करता है। आर्य का अर्थ ही श्रेष्ठ व्यक्ति से लिया गया है। अतः आर्य के कार्य सदा शास्त्रानुकूल होते है। उनसे मर्यादा और परम्परा की रक्षा बनी रहती है। अतः आर्यो के सम्यंक चेष्टाए ही उनकी संस्कृति कहलाती है।

मौलिनोव्सकी के अनुसार– ''संस्कृति मनुष्य की कृति है तथा एक साधन है जिसके द्वारा वह अपने लक्ष्यों की प्राप्ति करता है। ''

टायलर के अनुसार– '' संस्कृति एक ऐसा जटिल समग्र है। जिसमें ज्ञान विष्वास, कला, नैतिकता, कानून प्रथा एवं समाज के सदस्य के रूप में रूप में मनुष्य द्वारा अर्जित अन्य दूसरी समर्थताएं सम्मिलित है।

1. समस्या कथनः–

''करौली जिले के स्नातक स्तर (कला एवं विज्ञान वर्ग)कि विद्यार्थियों में भारतीय संस्कृति के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन''

2. अध्ययन की आवष्यकताः–

आज व्यक्ति ने अपने रहन–सहन के तौर –तरीकों को पूर्णतया बदलकर आधुनिकता की चादर ओड ली है। प्रत्येक व्यक्ति की अपनी संस्कृति होती है। तथा इस संस्कृति के बनने में हजारों वर्षो का समय लगता है। तब जाकर संस्कृति का कोई स्वरूप स्पष्ट तैयार होता है। लेकिन मनुष्य ने इसे अपने डग से परिभाषित किया है। जिसे वह अपने शब्दों में आधुनिकता की संज्ञा देता है। इस प्रकार मनुष्य ने अपने संस्कृति के उन अमूल्य मूल्यों का जिनका निर्माण हजारों वर्षो के परिणामस्वरूप होता है को अपने अनुसार परिभाषित किया है तथा इसे सांस्कृतिक मूल्यों में गिरावट की संज्ञा दी जा सकती है।

चूँकि षिक्षा का प्रमुख उद्देष्य व्यक्ति का सर्वागीण विकास करना है। तथा इस सर्वाणीण विकास में मनुष्य का सांस्कृतिक विकास भी सामिल है। अतः वह आवष्यक हो जाता है कि व्यक्ति को उसके सांस्कृतिक मूल्यों का बोध करवाया जाये ताकि षिक्षा के इस उद्देष्य की प्राप्ति की जा सके। चूंकि शोधार्थी द्वारा बहुत प्रयत्न करने के बाद भी इस शोध समस्या पर शोध कार्य देखने को नहीं मिला तथा आज के बालक ही कल के राष्ट्र निर्माता है। इस बाल को ध्यान

में रखते हुए शोधार्थी के मन में यह जिज्ञाषा उत्पन्न हुई कि क्यों न आज के बालकों में सांस्कृतिक बोध का अध्ययन किया जाये ताकि उन्हें उनकी संस्कृति से परिधित कराया जा सके जिससे सास्कृतिक मूल्यों में हो रही गिरावट को रोका जा सके।

3. सम्बन्धित साहित्य का अध्ययनः–

खण्डेलवाल मोनिका (2017)– इन्होंने अपने शोध– भारतीय व्यक्तित्व का अध्ययन ''के अन्तर्गत लिखा कि व्यक्तित्व समाज में संस्कृति का निर्माझा करता है। धर्म एवं दर्षन संस्कृति की सुरक्षा करते है। व्यक्ति अपने धर्म के प्रति आदर एवं श्रद्धा रखकर स्वयं के व्यक्तित्व का निर्माण करता है। साथ ही संस्कृति के संरक्षण में अपनी भूमिका का निर्वाह करता है।

सिंह डॉ विनोद कुमार (2016)– इन्होंने अपने शोध पत्र – आधुनिक समाज में धर्म, विज्ञान व षिक्षा के अन्तर्गत पाया कि धार्मिक षिक्षा व्यवहार पर अवलम्बित होनी चाहिए। हमें धर्मो एवं संस्कृति के प्रति आदर जागृत करना चाहिए तथा समाज के संकीर्ण विचारों को दूर करना चाहिए। संस्कृति में परम्पराओं के अन्तर्गत उपलब्ध संकीर्ण विचारों कटुटरता रूढिवादिता पुराने विचारों आदि को विज्ञझान की तार्किकता दूरदर्षिता एवं͵तिषीलता के माध्यम से परिवर्तित किया जा सकता है।

शर्मा रामकरण (2010)– इन्होंने अपने लेख ''भारतीय संस्कृति एवं र्ध के अन्तर्गत लिखा है कि भारत में विभिन्न धर्मो के आधार पर विभिन्न संस्कृतियां है। किन्तु समग्र आधार पर समस्त विष्व के वे एक रूप भारतीय संस्कृति का रूप धारण कर लेती है। अर्थात अन्तिम रूप में सबका केन्द्र विन्दू एक है।

शर्मा डॉ सत्या के (2009) इन्होंने '' बालकों की संस्कृति के प्रति अवधारणा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण के अध्ययन के अन्तर्गत पाया कि बालक ओपचारिक पारिवारिक संसर्ग के अनुसरण के आधार पर संस्कृति के प्रति एक सकारात्मक दृष्टिकोण विकसिक कर लेता है।

4. शोध अध्ययन के उद्देष्यः–

1. कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की भारतीय संस्कृति के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
2. कला वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की भारतीय संस्कृति के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
3. कला वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी छात्रों की भारतीय संस्कृति के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
4. कला वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं की भारतीय संस्कृति के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
5. विज्ञान वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की भारतीय संस्कृति के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
6. विज्ञान वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की भारतीय संस्कृति के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
7. विज्ञान वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी छात्रों की भारतीय संस्कृति के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
8. विज्ञान वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं की भारतीय संस्कृति के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
9. कला व विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की भारतीय संस्कृति के प्रति अभिवृत्ति का अध्यन करना।
10. कला व विज्ञान वर्ग के ग्रामीण विद्यार्थियों की भारतीय संस्कृति के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
11. कला व विज्ञान वर्ग के शहरी विद्यार्थियों की भारतीय संस्कृति के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

5. शोध अध्ययन की परिकल्पनाएः–

1. कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की भारतीय संस्कृति के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. कला वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की भारतीय संस्कृति के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. कला वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी छात्रों की भारतीय संस्कृति के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. कला वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं की भारतीय संस्कृति के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
5. विज्ञान वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की भारतीय संस्कृति के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
6. विज्ञान वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की भारतीय सस्कृति के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
7. विज्ञान वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी छात्रों की भारतीय संस्कृति के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
8. विज्ञान वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं की भारतीय संस्कृति के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
9. कला व विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की भारतीय संस्कृति के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
10. कला व विज्ञान वर्ग के ग्रामीण विद्यार्थियों की भारतीय संस्कृति के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
11. कला व विज्ञान वर्ग के शहरी विद्यार्थियों की भारतीय संस्कृति के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

6. शोध परिसीमनः–

1. प्रस्तुत शोध केवल करौली जिले तक सीमित रखा गया है।
2. प्रस्तुत शोध में न्यादर्ष हेतु 2 महाविद्यालयों का चयन किया गया है।

3. करौली जिले के 2 महाविद्यालयों का चययन किया गया ।

7. शोध विधिः–

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्ता ने अपनी अध्ययन समस्या के उद्देष्यों को प्राप्त करने हेतु वर्णनात्मक विधि के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है। क्योंकि इस विधि से पूर्ण निर्धारित उद्देष्यों की पूर्ति की जा सकती है।

8. जनसंख्या एवं सन्दर्भः–

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में करौली जिले के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में शामिल किया गया है।
प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने न्यादर्ष का चयन धन एवं समय की सीमा को ध्यान में रखते हुए सोद्धेष्य यादृच्छिक विधि से किया है इसलिए2 महाविद्यालयों के 80 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। जिसमें 40 विद्यार्थी सरकारी एवं 40 विद्यार्थी गैर–सरकारी है।

क्र.सं.	महाविद्यालय का नाम	छात्र संख्या	छात्रा संख्या	कुल
1	विवेकानन्द कॉलेज, सूरोठ, जिला –करौली	20	20	40
2	रामदुलारी कॉलेज हिण्डोन जिला करौली	20	20	40
कुल योग		40	40	40

9. शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधार्थी द्वारा निम्नलिखित उपकरण प्रयुक्त किये है– स्वनिर्मित प्रष्नावली

10. सांख्यिकीय विधियों

केन्द्रीय प्रवृत्ति का मान ज्ञान करने हेतु शोधकर्ता के द्वारा मध्यमान को काम में लिया गया है।

11. पदत्तों का निष्कर्ष

परिकल्पना1– 1 कला वर्ग के छात्र व छात्राओं की भारतीय संस्कृति के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

क्र.सं.	वर्ग	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी मूल्य	0.5 स्तर पर सार्थकता
1	छात्र	20	27.9	3.44	0.16183	सार्थक अन्तर नहीं है।
2	छात्रा	20	26.9	5.35		

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि टी का प्राप्त मूल्य 0.61 है जो df =48के लिए .05 व 01 के लिए निर्धारित 0.5 विष्वास स्तर पर निर्धारित मूल्य तथा 0.01 तक निर्धारित मूल्यों से कम है। अतः सार्थक अन्तर नहीं है। इसलिए नकारात्मक परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की भारतीय संस्कृति के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

परिकल्पना1– 2 कला वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की भारतीय संस्कृति के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

क्र.सं.	वर्ग	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी मूल्य	0.5 स्तर पर सार्थकता
1	शहरी	20	26.7	3.65	0.1023	सार्थक अन्तर नहीं है।
2	ग्रामीण	20	27.0	7.75		

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि टी का प्राप्त मूल्य 0.10 है जो कि df =48के लिए .05 व 01 के लिए निर्धारित 0.5 विष्वास स्तर पर निर्धारित मूल्य तथा 0.01 तक निर्धारित मूल्यों से कम है। अतः सार्थक अन्तर नहीं है। इसलिए नकारात्मक परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। कला वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की भारतीय संस्कृति के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

परिकल्पना1– 3 कला वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी छात्रों की भारतीय संस्कृति के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

क्र.सं.	वर्ग	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी मूल्य	0.5 स्तर पर सार्थकता
1	ग्रामीण छात्र	10	28.1	5.53	0.22	सार्थक अन्तर नहीं है।
2	शहरी छात्र	10	28.9	7.75		

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि टी का प्राप्त मूल्य 0.22 है जो कि df =48के लिए .05 व 01 के लिए निर्धारित 0.5 विष्वास स्तर पर निर्धारित मूल्य तथा 0.01 तक निर्धारित मूल्यों से कम है। अतः सार्थक अन्तर नहीं है। इसलिए नकारात्मक परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। कला वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी छात्रों की भारतीय संस्कृति के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

परिकल्पना1– 4 कला वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं की भारतीय संस्कृति के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

क्र.सं.	वर्ग	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी मूल्य	0.5 स्तर पर सार्थकता
1	ग्रामीण छात्रा	10	29.5	4.0	0.853	सार्थक अन्तर नहीं है।
2	शहरी छात्रा	10	27.7	6.07		

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि टी का प्राप्त मूल्य 0.853 है जो कि df =48के लिए .05 व 01 के लिए निर्धारित 0.5 विष्वास स्तर पर निर्धारित मूल्य तथा 0.01 तक निर्धारित मूल्यों से कम है। अतः सार्थक अन्तर नहीं है। इसलिए नकारात्मक परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। कला वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं की भारतीय संस्कृति के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

परिकल्पना1– 5 कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की भारतीय संस्कृति के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

क्र.सं.	वर्ग	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी मूल्य	0.5 स्तर पर सार्थकता
1	छात्र	20	27.9	3.44	0.119	सार्थक अन्तर नहीं है।
2	छात्रा	20	26.7	3.65		

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि टी का प्राप्त मूल्य 1.19 है जो कि df =48के लिए .05 व 01 के लिए किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं है। इसलिए नकारात्मक परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। विज्ञान वर्ग के छात्र व छात्राओं की भारतीय सस्कृति के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

परिकल्पना1– 6 विज्ञान वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की भारतीय संस्कृति के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

क्र.सं.	वर्ग	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी मूल्य	0.5 स्तर पर सार्थकता
1	ग्रामीण	20	26.9	5.35	0.028	सार्थक अन्तर नहीं है।
2	शहरी	20	27.0	7.75		

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि टी का प्राप्त मूल्य 0.028 है जो कि df =48के लिए .05 व 01 के लिए किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं है। इसलिए नकारात्मक परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। विज्ञान वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की भारतीय संस्कृति के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

परिकल्पना1– 7 विज्ञान वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी छात्रों की भारतीय संस्कृति के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

क्र.सं.	वर्ग	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी मूल्य	0.5 स्तर पर सार्थकता
1	ग्रामीण छात्र	10	28.1	5.53	0.7513	सार्थक अन्तर नहीं है।
2	शहरी छात्र	10	29.5	4.0		

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि टी का प्राप्त मूल्य 0.7513 है जो कि df =48के लिए .05 व 01 के लिए किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं है। इसलिए नकारात्मक परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। विज्ञान वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी छात्रों की भारतीय संस्कृति के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

परिकल्पना– 8 विज्ञान वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं की भारतीय संस्कृति के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

क्र.सं.	वर्ग	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी मूल्य	0.5 स्तर पर सार्थकता
1	ग्रामीण छात्रा	10	28.9	7.75	0.310	सार्थक अन्तर नहीं है।
2	शहरी छात्रा	10	6.07	6.07		

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि टी का प्राप्त मूल्य 0.310 है जो कि df =48के लिए .05 व 01 के लिए किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं है। इसलिए नकारात्मक परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। विज्ञान वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं की भारतीय संस्कृति के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

परिकल्पना– 9 कला व विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की भारतीय संस्कृति के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

क्र.सं.	वर्ग	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी मूल्य	0.5 स्तर पर सार्थकता
1	कला	40	27.9	3.44	0.1183	सार्थक अन्तर नहीं है।
2	विज्ञान	40	28.1	5.53		

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि टी का प्राप्त मूल्य 0.1183 है जो कि df =48के लिए .05 व 01 के लिए किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं है। इसलिए नकारात्मक परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। कला व विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की भारतीय संस्कृति के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

परिकल्पना– 10 कला व विज्ञान वर्ग के ग्रामीण विद्यार्थियों की भारतीय संस्कृति के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

क्र.सं.	वर्ग	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी मूल्य	0.5 स्तर पर सार्थकता
1	कला	20	26.7	3.65	2.39	सार्थक अन्तर नहीं है।
2	विज्ञान	20	29.5	4.0		

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि टी का प्राप्त मूल्य 2.39 है जो कि df =48के लिए .05 व 01 के लिए किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं है। इसलिए नकारात्मक परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। कला व विज्ञान वर्ग के ग्रामीण विद्यार्थियों की भारतीय संस्कृति के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

परिकल्पना– 11 कला व विज्ञान वर्ग के शहरी विद्यार्थियों की भारतीय संस्कृति के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

क्र.सं.	वर्ग	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी मूल्य	0.5 स्तर पर सार्थकता
1	कला	20	26.9	5.35	0.56	सार्थक अन्तर नहीं है।
2	विज्ञान	20	28.9	7.75		

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि टी का प्राप्त मूल्य 0.56 है जो कि df =48के लिए .05 व 01 के लिए किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं है। इसलिए नकारात्मक परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। कला व विज्ञान वर्ग के शहरी विद्यार्थियों की भारतीय संस्कृति के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

12. शैक्षिक निहतार्थ–

1. षिक्षा विभाग के लिए– षिक्षा विभाग माध्यमिक स्तर पर बालकों की अभिवृत्ति को मद्देनजर रखकर पाठ्यक्रम की समीक्षा करें तथा पाठ्यक्रम मं सम्बन्धित विषयवस्तु का समावेष कराये तथा संस्कृति सम्बन्धी विषयवस्तु को पाठ्यक्रम का अनिवार्य अंग बनाये तथा यह सभी स्तरों पर हो।
2. **अध्यापकों के लिए–** शैक्षिक संस्थानों में किया गया शोध कार्य कब तक अनुपयोगी या बेकार है जब तक की वह कम से कम षिक्षा के क्षेत्र में कोई नवीनतम योगदान न दे सके तथा इसकी उपलबिधयों का उपयोग षिक्षा से सम्बन्धित व्यक्तियों के लिए न हो । प्रस्तुत शोध गीता रूपी ज्ञान अमृत संस्कृति के क्षेत्र में ज्ञान पिपासू षिक्षकों को वृत्ति प्रदान करेगा ऐसी आषा है। इस शोध अध्ययन के उपरान्त अनेक संस्कृति सम्बन्धी कार्य जैसे कार्यगोष्ठी, वार्ताए, प्रषिक्षण, पद यात्राएं जन रैलियां, संस्कृति दिवस मनाना, कविता, गीत, संगीत, नाअक, निवंध एवं प्रष्नोत्तरी प्रतियोगिताएं, पत्र वाचन प्रतियोगिताए एवं साहित्य संकलन आदि कार्य करवाकर अध्यापकों द्वारा चेतना दल निर्मित कर जन जागरण भी किया जा सकता है।
3. **अभिभावकों के लिए–** प्रस्तुत शोध के द्वारा अभिभावक स्वयं संस्कृति के प्रति जागरूक होंगे तथा बालक प्रारम्भिक अवस्था में ही संस्कृति के प्रति रूचि, अभिवृत्ति एवं अभिरूचि जागृत कर सकेंगे तथा उन्हें संस्कृति के प्रति बता सकेगें।
4. **विद्यार्थियों के लिए–** षिक्षा के क्षेत्र में सभी भौतिक एवं मानवीय केवल और केवल विद्यार्थियों को ही केन्द्र में मानकर काम में लाये जाते है। विद्यार्थियों द्वारा विभिन्न सांस्कृतिक एवं साहित्यिक कार्यक्रमों के आयोजन द्वारा विद्यार्थियों से संस्कृति के संरक्षण हेतु कार्य करवाया जा सकता है। इस प्रकार प्रस्तुत शोध से संस्कृति संरक्षण हेतु विद्यार्थियों को सर्वाधिक लाभ होगा।

13. भावी शोध हेतु सुझावः–

1. षिक्षित एवं अषिक्षित किषोरों के सन्दर्भ में अध्ययन किया जा सकता है।
2. अध्यापक एवं अध्यपकों के सन्दर्भ में संस्कृति के प्रति अभिवृत्ति एवं पर्यावरण चेतना का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. बुद्धिलब्धि की भिन्नता के आधार पर अंग्रेजी व हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों का अध्ययन किया जा सकता है।
4. सरकारी एवं निजी विद्यालयों के षिक्षकों के सन्दर्भ में संस्कृति के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
5. उच्च कक्षाओं में छात्र छात्राओं के सन्दर्भ में भी उपरोक्त शोध उपयोग किया जा सकता है।

डीएलएड के अलावा बीएड एवं एमएड प्रषिक्षणार्थियों की नैतिक सोच, सामाजिक मूल्य एवं बाल अधिकारों के प्रति अभिवृत्ति आकलन किया जा सकता है।

विविध महाविद्यालयों के छात्र–छात्राओं का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

बहिर्मुखी एवं अन्तर्मुखी दोनो प्रकार के अन्तर वाले विद्यार्थियों की नैतिक सोच, सामाजिक मूल्य एवं बाल अधिकारों से सम्बन्धित अध्ययन किया जा सकता है।